Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ2406IIV12P002

e-ISSN No. 2394-8426
June-2024
Issue–II, Volume–XII

समकालीन हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श

प्रा.डॉ. जाधव के.के.
सहयोगी प्राध्यापक
पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर महाविद्यालय
राणीसावरगाव,ता.गंगाखेड जि.परभणी(महा.)
Email ID - kkjadhav07@gmail.com
Mob No- 9421051807 & 8623870907

Received on: *16 May ,2024* ***Revised on:*** *20 June ,2024* ***Published on:*** *30 June ,2024*

शोधसार :

समकालीन हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श पर चिंतन हों रहा है।आज का साहित्यकार हिजड़ा कहे जाने वाले किन्नर समुदाय को केंद्र में रखकर उपन्यास लेखन कर रहा है। किन्नर संबंधी प्रसिद्ध उपन्यासों में-यमदीप,गुलाल मंडी,किन्नर कथा,जिंदगी 50-50,मैं भी औरत हूं,मैं पायल,पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, तीसरी ताली, दरमियाना तथा उपन्यास रहे हैं। हिंदी साहित्य में किन्नर समुदाय को केंद्र में रखकर 2002 में प्रकाशित डॉ.नीरजा माधव जी का यमदीप पहला उपन्यास माना जाता है।इस उपन्यास के पश्चात ही किन्नर विमर्श संबंधी अन्य उपन्यासों का निर्माण हुआ है।किन्नर समुदाय के लोग मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं,जिनमें-बचुरा,नीलिमा,मनसा तथा हंसा ।सभी प्रकार के किन्नर रेलवे,बस स्टॉप,सड़क, मोहल्ला,गली,चौराहा तथा अन्य स्थानों पर ताली पीट-पीट कर भीख मांगते हैं।साथ ही कई किन्नर समुदाय अन्य काम भी करते हुए नजर आते हैं।अन्य समाज की ही तरह किन्नर समुदाय के रीति-रिवाज,परंपरा,लोकविश्वास तथा उनकी लोक संस्कृति होती है।चारों प्रकार के किन्नरों का अपना-अपना एक मुखिया होता है। इस मुखिया को गुरु मानते हैं। इस गुरु के इशारे पर ही सभी किन्नरों के समुदाय चलते हैं।

कठिन शब्दों के अर्थ:-

समकालीन-आज का युग/आधुनिक,**विमर्श** -विवेचन, परीक्षण, **किन्नर** -विकृत व्यक्ति, **हिजड़ा** -जो कि स्त्री और पुरुष न हो ऐसा व्यक्ति, **यमदीप** -दीपोत्सव का पहला दिन, यमराज के लिए दीपक जलाने की पद्धति, **मंडी** -बजार,हाट, व्यापार का स्थान,**दरमियाना-**बीच में,मध्य में, **नाला सापोरा-** मुंबई महानगर क्षेत्र के भीतर का एक शहर

मानव समाज में जो कुछ भी घटित होता है, उसका चित्र साहित्यकार अपनी रचनाओं में पिरोने का काम करता है। साहित्य ही सच्चे रूप में समाज का दर्पण होता है। साहित्य के माध्यम से ही समाज को नई दिशा मिलती है। हर एक समाज में व्याप्त सभी समस्याओं को साहित्यकार अपने ढंग से अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।आज के युग में सभी भारतीय भाषाओं तथा उसकी विधाओं में विविध विमर्शों पर अध्ययन, मनन, चिंतन हो रहा है। आज स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, किसान विमर्श, घुमंतू विमर्श, किन्नर विमर्श, आदिवासी विमर्श, वृद्ध विमर्श, अल्पसंख्याक विमर्श, भ्रष्टाचार विमर्श, विकलांग विमर्श तथा अन्य विमर्श पर गंभीरता से चिंतन, अध्ययन हो रहा है। हर एक विमर्श पर आज का साहित्यकार लेखन कर रहा है। सभी विमर्शों पर लेखन करना आज के युग में महत्वपूर्ण हो गया है। सभी रचनाकार इन गंभीर विषयों पर चिंतन-मनन कर लेखन कर रहे हैं, साथ ही इन विषयों को नये ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। आज का रचनाकार अछूते विषयों पर लेखन कर उनकी समस्याओं को समाज के सामने लाने का प्रयत्न कर रहा है।

सामान्यत: विमर्श का अर्थ- संवाद, परिचर्चा, तर्क- वितर्क, चिंतन के रूप में लिया जा रहा है ।अर्थात किसी विषय पर समूह द्वारा गहन चिंतन, मनन, एवं संवाद- विवाद, तर्क- वितर्क, वार्तालाप होता है,उसी को हम विमर्श कह सकते हैं ।विमर्श के संदर्भ में डॉ.रिजवी लिखते हैं कि “विमर्श यानी समालोचना, परामर्श, परीक्षा, किसी बात पर अच्छी तरह विचार करना”1 अंग्रेजी भाषा में विमर्श शब्द के लिए(Consultation)कंसल्टेशन शब्द का प्रयोग किया जाता है।आज के युग में साहित्यकार अलग-अलग विषयों एवं विमर्शों पर लेखन करने लगा है। प्राचीन तथा मध्ययुगीन काल में विशिष्ट धाराओं पर ही केंद्रित कर रचनाएं लिखी जा रही थी। परंतु आज 21वीं सदी में साहित्यकार वैश्वीकरण के बदलाव को देखते हुए अलग-अलग विषयों पर अपनी रचनाओं को लेकर रचनाएं लिख रहा है। इन रचनाओं में लेखक समाज में घटित ज्वलंत घटनाओं को लेकर रचनाए लिख रहा है।

इसी प्रकार से आज का साहित्यकार,रचनाकार लिंग निरपेक्ष समाज, तृतीय लिंगी अर्थात किन्नर, हिजड़ा पर भी लेखन कर समाज के सामने किन्नर समाज की दशा- दिशा, जीवन पद्धति, रीति- रिवाज, उपेक्षा,उनकी समस्याएं तथा अन्य पहलुओं पर लेखन कर समाज के सामने किन्नर की स्थिति को दर्शाने का प्रयत्न कर रहा है।

किन्नर शब्द किम+नर के योग से किन्नर शब्द बना है। जिसका अर्थ हिजड़ा,नपुंसक होता है। किन्नर समुदाय के लोगों को अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से उल्लेखित किया जाता है। जिनमें कई लोग किन्नरों को- हिजड़े, खुसरो, अली, छक्का, उभयलिंगी , तृतीय लिंगी,थर्ड जेंडर,नपुंसक तथा अन्य

नामों से उल्लेखित करते हैं। किन्नर समुदाय के लोग हर एक क्षेत्र में निवास करते हैं वह आम मानव की ही तरह होते हैं।

किन्नर का चित्रण हमें प्राचीन युग के रामायण, महाभारत ग्रंथों में भी देखने को मिलता है। प्राचीन काल से आजतक किन्नर समाज को सभ्य कहे जानेवाला समाज तिरस्कार की नजरों से ही देखा हुआ नजर आता है।किन्नर समाज की स्थिति के संदर्भ में एक कविता प्रसिद्ध है-

"वह रे, कुदरत तेरी कैसी खेल निराली,
एक का घर भर दिया, दूसरे की झोली भी खाली ।
जिसको दिया आधा, दिल का है वह राजा,
फिर भी घर-घर घूम कर, बजाता है बाजा।।
वे अपनी पहचान को भी, है तरसते,
फिर भी उनकी दुआओं से है दूसरों के घर सजते"2

हिंदी साहित्य में किन्नर समाज के संदर्भ में कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध तथा अन्य विधाओं में रचनाएं हो रही है। ज्यादातर किन्नर समाज के संदर्भ में कहानी और उपन्यास में चित्रण देखने को मिलता है।

हिंदी साहित्य के उपन्यास विधा में किन्नर समाज को लेकर लिखें गये प्रसिद्ध उपन्यासकारों में - निरजा माधव का 'यमदीप', डॉ.अनसूया त्यागी का 'मैं भी औरत हूं', प्रदीप सौरभ का 'तीसरी ताली', महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा'और'मै पायल' निर्मला मुराडिया का 'गुलाल मंडी', चित्रा मुद्गल का 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा', भगवंत अनमोल का 'जिंदगी 50-50', सुभाष अखिल का 'दरमियाना' है।

इसी प्रकार से अन्य रचनाकारों ने भी किन्नर समाज के संदर्भ में उपन्यास लिखें है। किन्नर विमर्श के संदर्भ में 2002 से आज तक लेखन होता हुआ दिखाई दे रहा है। 21वीं सादी की नई धारा के रूप में किन्नर विमर्श को माना जा रहा है। भारतीय संविधान ने सभी मानव समाज को समान हक और मानव को मानव की तरह जीने का हक दिया है। सभ्य समाज के लोग आज भी किन्नर समाज को मानव के रूप में तो देखते हैं परंतु तुच्छ दृष्टि से ही।किन्नर मानव होकर भी सभ्य समाज में उनका कोई अस्तित्व नहीं है। किन्नर समाज की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए डॉ रजनी प्रताप जी ने लिखा है कि,"किन्नरों को जीवन के प्रारंभ से लेकर जीवन के अंत तक अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शारीरिक विकृतियों के अलावा दूसरी चुनौती है,आर्थिक विपन्नता की। किन्नर समुदाय के लोग मंगल पर्वों और उत्सवों पर नाच गाकर तालियां पीटकर अपना जीविकोपार्जन करते हैं।सरकारी नीतियों में उनके विकास के लिए विशेष प्रबंध नहीं किए गए हैं।"3

किन्नर समुदाय के लोग मुख्यतःबचुरा,नीलिमा, मनसा तथा हंसा प्रकार के होते हैं। बचुरा प्रकार के किन्नर वास्तविक रूप के होते हैं, जो कि जन्म से ही ना तो स्त्री होते हैं ना कि पुरुष। नीलिमा प्रकार के किन्नर परिस्थितिवश बने हुए होते हैं। मनसा प्रकार के किन्नर मानसिक रूप से किन्नर समझते हैं, तथा हंसा प्रकार के किन्नर वे होते हैं, जो कि यौन अक्षमता के कारण किन्नर समझने लगते हैं। चारों प्रकार के किन्नरों का अपना-अपना एक मुखिया होता है। इस मुखिया के इशारों पर ही अपना समूह चलता है। इस समुदाय के लोग अपने मुखिया को ही गुरु मानते हैं। किन्नर समुदाय में भी सभ्य समाज की तरह अपने-अपने रीति- रिवाज, रूढी- परंपराएं, लोक विश्वास, लोक संस्कृति होती हैं। ज्यादातर सभी प्रकार के किन्नर रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड,सड़क, गली- मोहल्ला, चौराहों तथा अन्य स्थानों पर अपनें हात से ताली पीठ- पीठ कर भीख मांग कर जीवन यापन करते नजर आते हैं।

समकालीन हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श:-

हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श पर लिखा गया पहला उपन्यास नीरजा माधव जी का 'यमदीप' माना जाता है। यह उपन्यास एक प्रतिकात्मक उपन्यास रहा है। किन्नर समाज की अवस्था, दशा,पीड़ा का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। दीपावली त्यौहार के अवसर पर दीपावली पर्व शुरू होने के पूर्व शाम के समय पर घर के बाहर दीपक लगाने की पद्धती है। इस दीपक को लगानें के पश्चात दोबारा उसकी तरफ देखते तक नहीं है। इसी दीपक की तरह किन्नर समाज की स्थिति को उपन्यासकार नीरजा माधव जी ने स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

अपने ही घर में किन्नर बच्चा सबसे पहले अपने ही परिवार से तिरष्कृत और उपेक्षा का पात्र बनता है। एक ही घर में जन्म लेने वाले किन्नर बालक के संदर्भ में लिखा है कि, "तीसरी लिंग में जन्मा बच्चा विस्थापित हो जाने के बाद वह बच्चा कैसा है? क्या करता है? क्या खाता होगा? आदि की खोज खबर भी उस परिवार के सदस्य नहीं लेते। हम इतने क्रूर क्यों बन जाते हैं कि वह कब तक जिया और कब मर गया, यह जानने की कोशिश भी नहीं करते हैं"4 इसी प्रकार का चित्रण यमदीप उपन्यास में उपन्यासकार ने किया है।किन्नर बालक को जन्म देने वाला मानव समाज ही है, परंतु वही मानव किन्नर को मानव के रूप में देखता नहीं। किन्नर को एक जानवर के रूप में तिरस्कृत,बहिष्कृत रूप में देखकर उसका मजाक उड़ाकर उपहास का पात्र बना देता है।सभ्य समाज उनको अपने समकक्ष नहीं मानता। किन्नरों के प्रति मानव समाज में कोई सहानुभूति दिखाई नहीं देती। किन्नर समाज के लोग अपने आप को एक असहायक, दुखी,विवश होकर जीवन यापन करते हुए दिखाई देते हैं।

हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श के संदर्भ में दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा' रहा है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों में सोना, चंदा तथा गुरु तारा का नाम लिया जाता है। इस उपन्यास की

प्रमुख पात्र सोना एक ऊंचे खानदान में जन्म लेने के बावजूद भी उसे अपने ही घरवाले स्वीकार नहीं करते। इस उपन्यास में किन्नर के जीवन की समस्याओं के साथ-साथ अन्य पहलुओं पर भी प्रकाश डालने का प्रयत्न उपन्यासकार ने किया है। महेंद्र भीष्म का ही दूसरा किन्नर विमर्श के संदर्भ में लिखा हुआ महत्वपूर्ण उपन्यास 'मैं पायल' रहा है । इस उपन्यास में उपन्यासकार ने किन्नर समाज की नरकीय, शापित जीवन पद्धति को उपन्यास में चित्रित करने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र पायल सिन्ह रहा है। पायल सिंह को ही जुगनी के रूप में जाना जाता है तथा यह पात्र वास्तविक रूप में है। पायल अर्थात जुगनी अपने बलबूते पर ऊंचे मुकाम तक पहुंचती है। उपन्यासकार महेंद्र भीष्म ने इस उपन्यास के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयत्न किया है कि,अगर किन्नर अपनी मेहनत से अलग-अलग क्षेत्रों में काम करें तो उसे अच्छे परिणाम एवं अच्छा फल मिल सकता है। इस उपन्यास की नायिका पायल शिक्षा में तेज होते हुए भी अपने ही घर से बाहर निकाला जाता है, क्योंकि वह एक हिजड़ा किन्नर है।एक स्थान पर महेंद्र भीष्म पायल के संदर्भ में लिखते हैं कि, "जब कभी पिताजी दारू के नशे में कोसते,गाली देते, यह योगिनी, हम क्षत्रिय के वंश में कलंक पैदा हुई है, साली हिजड़ा है..... आदि जाने क्या-क्या बकते रहते थे "5 'मैं पायल' उपन्यास में उपन्यासकार यह संदेश देता है कि, घर परिवार वाले लोग ही अपने बालकों तथा बच्चों को तिरस्कार एवं घृणा की दृष्टि से देखेंगे तो अन्य सभ्य समाज के लोग तो इस प्रकार के बच्चों को तुच्छ दृष्टि से ही देखेंगे। इस उपन्यास में किन्नर पायल की यातना,उनका संघर्ष तथा उनकी जीजिविषा को उपन्यासकार चित्रित करने का प्रयास करता है। एक स्थान पर पायल की मानसिकता का चित्रण करते हुए महेंद्र भीष्म लिखते हैं कि,"पिताजी ने पास रखी बाल्टी में भरे पानी से मुझे नहला दिया, फिर वही रखी चप्पल को भरे पानी में डूबा डूबाकर मेरे नग्न शरीर की चमड़ी उधेड़ने लगे.... रस्सी का एक छोर बांधकर मुझे मारने के लिए रस्सी के दूसरे छोर का फंदा मेरी गर्दन में बांधकर पिताजी ने मुझे फांसी दे दी थी।"6 इस उपन्यास की पायल उर्फ जुगनी को उसके ही पिता द्वारा गले में फंदा डालकर मारना तथा अधमरा कर छोड़ना यह एक पिता के लिए शोभा नहीं देता। इसलिए किन्नर समाज के प्रति हर एक मानव की मानसिकता बदलना आवश्यक है।

किन्नर विमर्श के संदर्भ में लेखन करनेवाले रचनाकारों में प्रदीप सौरभ का नाम प्रमुखतः से लिया जाता है। प्रदीप सौरव का किन्नर के जीवन पर लिखा हुआ उपन्यास'तीसरी ताली' रहा है। इस उपन्यास में किन्नर समुदाय की प्रमुख समस्याओं के साथ-साथ जीवन यापन करने की पद्धति,पेट भरने की कला तथा उनकी सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों को केंद्र में रखकर ही इस उपन्यास की सृष्टि की है। इस उपन्यास का नायक विनीत उर्फ विनीता रहा है। इसके साथ ही अन्य पात्रों में रानी, राजा, ज्योति, मंजू तथा विजय है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने किन्नरों की सामाजिक,आर्थिक,राजकीय,

सांस्कृतिक,धार्मिक स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया गया है। आज भी किन्नरों को मानव के रूप में सभ्य समाज देखता नहीं,परंतु लेखक इस उपन्यास के माध्यम से किन्नरों के मानवाधिकार को दिलाने का प्रयत्न करता हुआ नजर आता है।

किन्नर विमर्श के संदर्भ में 2013 में प्रकाशित निर्मला बुराडिया का उपन्यास 'गुलाल मंडी' रहा है। इस उपन्यास में लेखिका ने किन्नर समाज की जिस्मफरोशी और मानव तस्करी का यथार्थ चित्रण किया है। जिस्मफरोशी का व्यवसाय मुख्यतः मंडियों में ही होता हुआ दिखाई देता है। इसलिए लेखिका ने इस उपन्यास का नाम ही 'गुलाल मंडी' रखा हुआ दिखाई देता है । इस उपन्यास में मुख्य तीन पात्र है,जिनमें कल्याणी, जानकी तथा अंगूरी है। इस उपन्यास में सुंदरता बनाए रखने के लिए ब्यूटी पार्लर व्यवसाय के माध्यम से जिस्मफरोशी का व्यवसाय किया जाता है,साथ ही सुंदर युवतियों को एक देश से दूसरे देश को बेचा जाता है। इसी प्रकार का चित्रण इस उपन्यास में लेखिका ने किया हुआ दिखाई देता है।

भगवंत अनमोल का उपन्यास 'जिंदगी 50-50' रहा है।इस उपन्यास में लेखक ने किन्नर समाज की आशा-आकांक्षा, ईच्छाएं,महत्वाकांक्षाएं तथा उनकी जरूरतों को अपनी रचना में पिरोने का काम किया है।इस उपन्यास में हर्ष और सूर्य नामक दो किन्नर पात्र है।इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि,यदि किन्नर समाज को अच्छी शिक्षा,अच्छा रोजगार,अच्छा व्यवसाय तथा उनके अधिकार दिए तो वह सभ्य समाज के प्रभाव में आने में देर नहीं लगेगी। एक आशावादी दृष्टिकोण उपन्यासकार इस उपन्यास में रखने का प्रयत्न करता है।

चित्रा मुद्गल का किन्नर समाज के जीवन पर प्रकाश डालने वाला प्रमुख उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा' रहा है।इस उपन्यास का प्रमुख पात्र विनोद है।कुछ समय बाद विनोद का ही रूपांतर किन्नर बिन्नी के रूप में होता है।इस उपन्यास के माध्यम से चित्रा मुद्गलजी यह कहने का प्रयत्न करती है कि,हर एक मानव एक समान होते हैं।चाहे वह किन्नर हो,या अन्य व्यक्ति।किन्नर समाज के प्रति सभ्य समाज की मानसिकता को लेखिका ने इस उपन्यास में चित्रित करने का प्रयास किया है। चित्रा मुद्गलजी एक स्थान पर किन्नर समाज के प्रति सभ्य समाज की मानसिकता को बदलने की अपील करते हुए लिखती है कि, "जरूरत है सोच बदलने की.... संवेदनशील बनने की। सोच बदलेगी तभी जब अभिभावक अपने लिंगदोषी बच्चों को कलंक मान किन्नरों के हवाले नहीं करेंगे.... यह पहचान जब उन्हें किन्नर के रूप में जीने नहीं दे रही समझ में तो सरकारी मान्यता मिल जाने के बाद जीने देगी?.... उसी रूप में उन्हें आरक्षित कर सरकार अभीभावकों को अपराध मुक्त कर खुली छूट दे रही है।"7 यह उपन्यास किन्नर समाज को लेकर लिखा गया प्रमुख उपन्यास माना जाता है।

किन्नर विमर्श के संदर्भ में 2005 में प्रकाशित डॉ अनसूया त्यागी का उपन्यास 'मैं भी औरत हूं' रहा है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र रोशनी और मंजुला है। रोशनी और मंजुला तो नारी है, लेकिन उनका जनन अंग विकसित नहीं हो पाया इसलिए सभ्य समाज इन दोनों को नारी रूप में स्वीकारने को तैयार नहीं है। यह उपन्यास सत्य घटना पर आधारित है। इस उपन्यास में एक पिता अपनी दोनों बेटियों का अस्पताल में जननअंग का ऑपरेशन करवा कर तथा उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाकर जीवन बसाने के लिए प्रेरित करता है। उनकी दोनों बेटियों का विवाह करवाया जाता है। और यह संदेश दिया जाता है कि,किन्नर समाज के लोगों का अस्पताल में इलाज कराने के पश्चात वह एक अच्छा इंसान बन सकता है,यह संदेश देने का प्रयत्न उपन्यासकार ने किया है।चिकित्सा शास्त्र का आधार लेकर किन्नर समाज के जीवन में बहुत कुछ बदलाव हो सकता है,यही शिख उपन्यास के द्वारा देने का प्रयत्न किया गया है।

सारांश:-

समकालीन हिंदी उपन्यासकारों ने अपनी ईमानदारी के साथ किन्नर समुदाय की स्थिति को समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया है। सभी उपन्यासों में किन्नर समुदाय की मजबूरी,उनकी व्यथा,उनका शोषण, भेद-भाव तथा उनकी पीड़ा को दर्शाने का प्रयत्न किया गया है।इसके साथ ही इस समुदाय में आ रहे बदलाव को भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।आज किन्नर समाज के लोग विश्व स्तर पर अपने मानवाधिकारों के लिए प्रयत्न कर रहा हैं। किन्नरों को भारत सरकार के सर्वोच्च न्यायालय ने 15 अप्रैल 2014 को संविधान के अनुच्छेद 19 (1) के तहत स्वतंत्र पहचान के रूप में तीसरी सूची, तीसरे लिंग तथा तृतीय लिंग के रूप में मान्यता दी है। किन्नर समुदाय को भारत सरकार के सर्वोच्च न्यायालय ने तृतीय लिंग के रूप में तो मान्यता दी है,परंतु यह मान्यता देने से उनके जीवन में उतना तो बदलाव नहीं आएगा।उनके जीवन में बदलाव आने के लिए सरकार की ओर से तथा अन्य सेवाभावी संस्थाओं की ओर से कुछ न कुछ उचित कदम उठाना आवश्यक हैं।उनके जीवन में बदलाव लाने के लिए। शिक्षा, रोजगार, उद्योग, कुटीर उद्योग तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराकर उनको सभ्य समाज के प्रवाह में लाने का प्रयास करना चाहिए। परंतु आज भी सभ्य समाज किन्नर समुदाय के साथ जानवरों जैसा व्यवहार कर उनके अधिकारों को देने से घबराता है।आज किन्नर समुदाय के लोग अपने ही घरवालों से नकारने के कारण विवश,दुखी, परेशान दिखाई देते हैं। किन्नरों के पास न तो शिक्षा है,न ही रोजगार वह बहिष्कृत, तिरस्कृत,उपेक्षित और शोषित होकर अपने अस्तित्व की तलाश करता हुआ जीवन यापन करता है। आज के युग में इस समुदाय में बहुत कुछ बदलाव भी देखने को मिलता हैं।कई किन्नर शिक्षा लेकर नौकरी,व्यवसाय,सामाजिक कार्य तथा राजनीति में भी कार्य करते हुए नजर आ रहे हैं।आज इस समुदाय को सभ्य समाज के प्रवाह में आने में कुछ ही दिन लगेंगे यह मेरा दावा के साथ पूरा विश्वास है।

https://doi.org/10.69758/GIMRJ2406IIV12P002

e-ISSN No. 2394-8426
June-2024
Issue–II, Volume–XII

संदर्भ सूची:-

1. बृहद हिंदी शब्दकोश- संपादक - डॉ.रिजवी- प्रष्ठ- 922

2.https://abhivyakti.life>kinnar

3. किन्नर समाज की चुनौतियां- डॉ.रजनी प्रताप- पृष्ठ -17

4. हिंदी साहित्य विविध विमर्श- डॉ.पी.एन. सगर,डॉ.राजाभाऊ पवार,डॉ.दिलीपकुमार गुंजरगे- पृष्ठ-142

5. मैं पायल- महेंद्र भीष्म- पृष्ठ- 106

6. मैं पायल- महेंद्र भीष्म- पृष्ठ- 74

7. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा- चित्रा मुद्‌गल- पृष्ठ -172